मिट्टी की जांच करायें

खेती री बातां

गर्मी की जुताई करें

वर्ष–15 अंक–5 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 मई 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

जोधपुर में ''खजूर टिश्यू कल्चर प्रयोगशाला'' का उद्घाटन

जोधपुर 1 अप्रेल। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जोधपुर के चौपासनी क्षेत्र में 20 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित **''डेट पाम टिश्यू कल्चर लैबोरेट्री''** के उद्घाटन के बाद आयोजित समारोह में उपस्थित किसानों, वैज्ञानिकों एवं व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस तरह सौर ऊर्जा से पश्चिमी राजस्थान में एक क्रांति ने जन्म लिया है, उसी प्रकार खजूर टिश्यू कल्चर से आने वाले कुछ वर्षों में एक नई क्रांति जन्म लेगी।

उन्होंने कहा की यह अपने तरीके की एक अलग ही प्रयोगशाला है तथा पूरे देश में इस तरह की और कोई प्रयोगशाला नहीं है। इसकी कामयाबी से पश्चिमी राजस्थान के किसानों की तकदीर बदल जाएगी। उन्होनें कहा कि अतुल लिमिटेड ने संयुक्त अरब अमीरात के विश्वविद्यालय से अनुबंध करके वहां से इसकी तकनीक प्राप्त की है तथा राजस्थान सरकार की हॉर्टीकल्चर डवलपमेंट सोसायटी से अनुबंध करके इस प्रयोगशाला की स्थापना की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब तक पश्चिमी राजस्थान के आठ जिलों में खजूर के पेड़ लगाये गये हैं जो विश्व के दूसरे देशों से आयात करके मंगवाये गये हैं। उन पौधों के लिये किसानों को तीन से चार हजार रुपये चुकाने पड़े जबकि इस प्रयोगशाला से बहुत ही कम कीमत में उच्च गुणवत्ता के खजूर के पौधे उपलब्ध हो जाऐंगे। पहले के कुछ सालों में उनकी संख्या कम होगी किंतु तीन चार सालों में इस प्रयोगशाला से वर्ष भर में ढाई लाख पौधे लिये जा सकेंगे। मुख्यमंत्री ने किसानों का आह्वान किया कि वे इसमें रुचि लें। समारोह को सम्बोधित करते हुए कृषि, पशुपालन एवं मत्स्यपालन मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने कहा कि पश्चिमी राजस्थान का किसान एक हैक्टर भूमि में जितनी उपज खजूर से प्राप्त कर सकता है, उतनी उपज किसी अन्य फसल से प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि खजूर की खेती से प्रति एकड़, प्रति वर्ष 2 लाख रुपये तक की आय प्राप्त की जा सकती है।

प्रत्येक ग्राम–पंचायत स्तर पर आयोजित होने वाले
''खरीफ अभियान–2012''
में भाग लें और सरकारी योजनाओं एवं अनुदान का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।
---अधिक जानकारी के लिये---
अपने निकटतम कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें।

वर्ष 2012–13 के लिए कृषि की प्रमुख घोषणाएं

जयपुर, 17 अप्रेल। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने राज्य विधानसभा में कृषि एवं पशुपालन तथा पशु चिकित्सा विभाग की वर्ष 2012–13 की अनुदान मांगों पर चर्चा करते हुए कृषि से संबंधित निम्नलिखित घोषणाएं की हैं:–

★ कृषकों को सहकारी संस्थाओं के माध्यम से प्रदेश में आगामी वर्ष स्वीकृत किये जाने वाले 1 लाख रूपये तक के फसली ऋण समय पर चुकाने पर सम्पूर्ण ब्याज राशि, अनुदान के रूप में राज्य सरकार देगी।

★ बटाई पर खेती करने वाले किसानों को फसली ऋण तथा राजकीय योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न सुविधाएं प्राप्त करने के लिए पात्र बनाने हेतु कानूनी प्रावधान कर लाभन्वित किया जाएगा।

★ किसानों को रबी में गेहूँ की फसल का उचित मूल्य दिलाने के लिए केन्द्र द्वारा घोषित समर्थन मूल्य के अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा 100 रूपये प्रति क्विंटल बोनस के रूप में दिये जाएंगे।

★ खरीफ 2012 में बांसवाड़ा, उदयपुर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ व सिरोही जिले के जनजाति उपयोजना क्षेत्र के जनजाति व गैर जनजाति बीपीएल कृषकों एवं बारां जिले के किशनगंज एवं शाहबाद तहसील के सहरिया जनजाति कृषकों को मक्का संकर किस्मों के बीज (5 किलोग्राम प्रत्येक कृषक) निःशुल्क वितरित किये जायेंगे।

★ राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत वर्ष 2010–11 में आठ चयनित जिलों (सीकर, झुंझुनू, बीकानेर, चुरू, नागौर, बाड़मेर, जोधपुर तथा जालौर) में लघु एवं सीमांत कृषकों को खरीफ 2012 में संकर बाजरा बीज मिनिकिट का वितरण किया जायेगा।

★ पोषण सुरक्षा के लिए सघन कदन्न संवर्धन कार्यक्रम (इनसिम्प) के तहत चयनित 12 जिलों में खरीफ 2012 में चयनित क्लस्टरों में लगभग 2 लाख हैक्टर क्षेत्र में उत्पादन तकनीक प्रदर्शन आयोजित कर कृषकों को बाजरा बीज व अन्य आदान उपलब्ध कराए जायेंगे।

★ वर्षा आधारित क्षेत्र विकास कार्यक्रम (आर.ए.डी.पी) चयनित 19 जिलों में क्रियान्वित किया जाएगा। इसके अन्तर्गत 60000 हैक्टर क्षेत्रफल में फसल विशेष आधारित फसल पद्धति प्रदर्शनों का आयोजन कर लगभग एक लाख कृषकों को लाभान्वित किया जायेगा।

★ उत्कृष्टता केन्द्र :–वर्ष 2012–13 में राज्य कृषि प्रबन्ध संस्थान दुर्गापुरा में विभिन्न उत्कृष्टता केन्द्र (सेन्टर ऑफ एक्सीलैन्स) यथा कृषि विस्तार, फार्म मशीनरी, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि क्रियाशील किये जायेंगे। उक्त संस्थान पर 7500–10,000 प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिवर्ष प्रशिक्षित किया जाना संभव होगा तथा कृषि व संबद्ध विभागों को प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराई जा सकेगी।

★ त्वरित चारा विकास कार्यक्रम के तहत वर्ष 2012–13 में कुल 10 लाख कृषकों को लाभान्वित किया जाएगा जिस पर 45 करोड़ रूपये व्यय होंगे।

★ महिला–कृषकों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि के लिए प्रशिक्षणों का आयोजन किया जायेगा। इसके अन्तर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर एक दिवसीय महिला कृषक प्रशिक्षण वर्ष 2012–13 में आयोजित किये जायेंगे।

★ उर्वरकों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए इस वर्ष 3 नई उर्वरक परीक्षण प्रयोगशालाओं (कोटा, अजमेर व श्रीगंगानगर) का कार्य प्रारंभ किया जायेगा।

★ वर्ष 2012–13 में 33 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में बूंद–बूंद सिंचाई संयंत्र व 94 हजार हैक्टर क्षेत्र में फव्वारा संयंत्र स्थापित किये जायेंगे तथा 600 जल संरक्षण ढाचों का निर्माण किया जायेगा।

★ वर्ष 2012–13 में 9 हजार 400 हैक्टर क्षेत्र में फल बगीचे, 100 ग्रीन हाउस व 90 शेडनेट स्थापित किये जायेंगे तथा 2 हजार प्याज भण्डार संरचनाओं का निर्माण करवाया जायेगा और 300 हैक्टर क्षेत्र में कृषकों के खेतों पर अनुदानित दरों पर खजूर पौध रोपण सामग्री उपलब्ध कराई जायेगी।

खरीफ–2012 हेतु प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित

राजस्थान स्टेट सीड्स कार्पोरेशन लिमिटेड ने खरीफ–2012 में सामान्य वितरण हेतु प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित की हैं जो निम्नानुसार हैं :–

क्र. स.	फसल	किस्म	विक्रय मूल्य (रु./क्विंटल)
1.	मूंगफली	आर.जी–382	6,000
		एच.एन.जी–10	5,100
		जी.जी.20 (गुली)	5,100
		टी.एल	5,100
		एम–13/प्रकाश एवं अन्य सभी किस्में	5,500
		जी.जी.–20 (गुली) प्रमाणित	
2.	कपास	देशी/अमेरिकन	4,500

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in bl vad esa—— www.krishi.rajasthan.gov.in

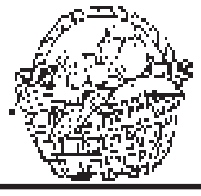
★ इस माह के कृषि कार्य .....
★ गुणी कमला .....
पृष्ठ 2

★ गाजर घास को पनपने ही ना दें.....
★ बागवानी से प्रगति की राह .....
★ मूंगफली में बीजोपचार .....
★ परख .....
★ क्षारीय भूमि ..... पृष्ठ 3

★ कुष्माण्ड कुल सब्जियों में कीट नियंत्रण ..
★ गर्मियों में सुस्ताएं नहीं.....
★ मिट्टी की जांच. .....
पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★ सिंचित मूंगफली की बुवाई का उपयुक्त समय जून माह के प्रथम सप्ताह से दूसरे सप्ताह तक है। मिट्टी जांच के आधार पर अंतिम जुताई से पूर्व प्रति हैक्टर 250 किलो जिप्सम मिलायें। प्रति हैक्टर 60 किलो फास्फेट और 15 किलो नत्रजन बुवाई के पहले नायले से ऊरकर देवें। फास्फेट तत्व की पूर्ति सिंगल सुपर फास्फेट (एस.एस.पी.) द्वारा किया जाना अधिक उचित है।

★ कपास की संकर किस्मों में बुवाई के समय गोबर की खाद के साथ 110 किलो डी.ए.पी. व 65 किलो यूरिया अथवा 300 किलो सिंगल सुपर फास्फेट व 110 किलो यूरिया तथा अमेरिकन किस्मों में बुवाई के समय 75 किलो डी.ए.पी. व 55 किलो यूरिया अथवा 220 किलो सिंगल सुपर फास्फेट व 75 किलो यूरिया तथा देशी किस्मों में 55 किलो डी.ए.पी. व 33 किलो यूरिया अथवा 150 किलो सिंगल सुपर फास्फेट व 50 किलो यूरिया ऊरकर देवें।

★ बी.टी. कपास में 150 किलो नत्रजन, 40 किलो फास्फोरस एवं 20 किलो पोटाश देवें। 50 किलो नत्रजन बुवाई के समय एवं शेष 50–50 किलो प्रथम एवं द्वितीय सिंचाई के समय देवें।

बागवानी

★ नींबू में रेड स्पाइडर माईट या सिट्रसससिला के नियंत्रण हेतु फॉरमेथियॉन 25 ई.सी. 1 मिली. दवा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। डाइबैक से ग्रसित पौधों में सूखी टहनियां काटें एवं कटे हुए भाग पर कॉपर आक्सीक्लोराइड का पेस्ट लगावें। पौधों पर कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम या मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★ फलदार पौधे एवं उनकी किस्मों के अनुसार खेत में गड्ढों के लिए निश्चित दूरी पर रेखांकन करें एवं उचित आकार के गड्ढे खोदकर 15–20 दिनों तक खुला छोड़ें। सामान्यतः आम 8–10 मी., आंवला 6–8 मी., अमरुद 6–7 मी., बेर 6–8 मी., नीबू 5 मी., लसोडा 8 मी., बील 7–8 मी., पपीता 2 मी. एवं करौंदा के लिए 3 मी. की दूरी पर गड्ढों का रेखांकन करें। आम, अमरुद, बेर, लसोड़ा, बील आदि के लिए 3 x 3 x 3 फीट एवं अनार, नींबू के लिये 2 x 2 x 2 फीट एंव पपीता के लिये 1.5 x 1.5 x 1.5 फीट आकार के गड्ढे खोदें।

सब्जियां

★ बैंगन एवं टमाटर की फसल में नियमित रुप से सिंचाई करते रहें। रोग एवं कीट की पहचान करके झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब 2 ग्राम दवा या कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फल एवं तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु कार्बेरिल 50 डब्ल्यू पी. 4 ग्राम दवा या फॉरमेथियॉन 50 ई. सी. 1 मिली. दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। दवा छिड़कने एवं फल तोड़ने में 8–10 दिनों का अंतर होना चाहिये।

★ फूल गोभी की अगेती किस्मों जैसे अर्ली पटना या अर्ली कुंवारी की नर्सरी में बुवाई करें। एक हैक्टर क्षेत्रफलमें 600–750 ग्राम बीज पर्याप्त रहता है।

★ प्याज की खेती के लिये किस्म एन–53, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड में से किसी एक का चयन करें। एक हैक्टर में बुवाई के लिये 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त रहता है।

★ मिर्च की खेती के लिये किस्में पूसा ज्वाला, मथानिया लोंग, पंत सी–1, जी–3, जी–5, पूसा सदाबहार, पंत सी–2 एवं जवाहर में से किसी एक का चयन करें। एक हैक्टर बुवाई के लिये 1 से 1.5 किलोग्राम बीज की आवश्यकता रहती है।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

★ पशुओं को गर्मी तथा लू से बचाएं।

★ पशुओं में परजीवी का उपचार करायें एवं गलाघोंटू व बी.क्यू. का टीका लगवाएं।

गाजर घास को पनपनें ही ना दें

गाजर घास एक अत्यन्त घातक एवं विषैला विदेशी खरपतवार है। यह फसलों के साथ–साथ मनुष्यों एवं पशुओं के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। इस खरपतवार में वर्ष भर फूल आते हैं व एक पौधा लगभग 7000 बीज उत्पादित करता है जो भूमि पर गिरकर वर्षाकाल में उगकर अत्यधिक पौध तैयार करते हैं। इसके स्पर्श के कारण मानव में अस्थमा, त्वचा रोग, जलन इत्यादि होती है।

रोकथाम :–

1. फूल आने से पूर्व इस खरपतवार को हाथों से (दस्ताने या प्लास्टिक की थैली पहनकर) जड़ सहित उखाड़ देवें।
2. फूल आने से पूर्व साधारण नमक के 20 प्रतिशत (1 किलो नमक 5 लीटर पानी)घोल का छिड़काव उपयोगी रहता है।
3. अकृषि क्षेत्र में फूल आने से पूर्व 2–5 किलोग्राम 2,4–डी एस्टर प्रति हैक्टर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
4. पेराक्वेट 0.1 प्रतिशत या ग्लाइफोसेट 1.5 किलोग्राम प्रति हैक्टर 400–500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करके भी नियंत्रण कर सकते हैं।

5. कृषि क्षेत्रों में बुवाई से पूर्व फसल के अनुसार सिमाजिन, एट्राजिन, एलाक्लोर, ब्यूटाक्लोर के उपयोग से संबंधित फसल में इसका नियंत्रण किया जा सकता है।

परख

अप्रैल 2012 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उतर भेजने वाले कृषकों में से लॉटरी द्वारा दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री डूंगरराम** पुत्र श्री तेजारामजी
   गाँव. पोस्ट–बेलवा खत्रिया
   पंचायत समिति– बालेसर,
   तहसील–शेरगढ़,
   जिला– जोधपुर (राज.)
2. **श्री रामसिंह जाट**
   पुत्र श्री रामनारायण जाट
   मु. पो0 ढतोब, वाया– मालपुरा,
   जिला– टौंक (राज.) 304502

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 गाजर घास नियंत्रण के लिए अकृषि क्षेत्र के लिए एक रसायन का नाम बताए ?

प्र.2 मिट्टी जांच का शुल्क प्रति नमूना कितने रुपये है ?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब इस पते पर –

उपनिदेशक कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118,
पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

मूंगफली में बीजोपचार

फसल उत्पादन में जलवायु, मिट्टी व बीज की प्रमुख भूमिका होती है। कीट/व्याधियों के नियंत्रण एवं पौषक तत्वों के लिए बीज उपचार कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। बीज से उत्पन्न होने वाली बीमारियों एवं कीटों से फसलों के बचाव के लिए बीजोपचार बहुत महत्वपूर्ण है। मूंगफली में बीज जनित रोग जैसे गलकट (कॉलर रॉट) से बचाव के लिए बुवाई से पहले प्रति किलो बीज में 3 ग्राम थाईरम या 2 ग्राम मैन्कोजेब अथवा कार्बेन्डिजम 2 ग्राम या टेबूकोनाजोल (2 डी.एस.) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। यदि रसायनिक फफूंदनाशी का कम उपयोग करना हो तो बीज को क्रमशः थाइरम (1.5 ग्राम) व ट्राईकोडरमा (10 ग्राम) प्रति किलो बीज तथा फिर राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। इसके साथ ही बुवाई से पूर्व 2.5 किलोग्राम ट्राईकोडर्मा प्रति हैक्टर की दर से 500 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर भूमि में मिलायें। यह उपचार गलकट (कॉलर रॉट) रोग में नियंत्रण में प्रभावी पाया गया है। सफेद लट की रोकथाम के लिये 40 किलोग्राम बीज को एक लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. या एक लीटर 120 मि.ली. इमिडाक्लोप्रिड 200 एस. एल. की दर से उपचारित करें। सर्वप्रथम फफूंदनाशी फिर कीटनाशी तथा अन्त में राईजोबियम कल्चर से बीजोपचार करें।

बागवानी से प्रगति की राह पर – संतोष भाकल

कृषि का मौजूदा स्वरुप चुनौतियों भरा है। एक तरफ जहाँ भूमि की उपजाऊ क्षमता घट रही है, वहीं दूसरी ओर जल स्तर निरन्तर घट रहा है। ऐसे समय में बागवानी और जैविक खेती एक कारगर हथियार बन सकता है। आइए जानते हैं इसी राह पर चलने वाली बून्दी जिले की प्रगतिशील कृषक महिला श्रीमती संतोष भाकल (पत्नी श्री हनुमान सिंह भाकल, गाँव रामगंज बालाजी, तहसील बून्दी) की सफलता की कहानी।

श्रीमती भाकल ने घटते जल स्तर और भूमि की उपजाऊ क्षमता में आ रही निरन्तर कमी के कारण उद्यानिकी क्षेत्र में कदम रखते हुए अपने खेत पर एक हैक्टर क्षेत्र में आँवले का बगीचा लगाया। वर्ष 2007–08 में इन्होंने अपने आँवले के बगीचे में ड्रिप संयंत्र की स्थापना करवाई। आज यह आँवला फल तथा आँवले का प्रसंस्करण कर सूखे आँवले निर्यात कर बहुत अच्छा मुनाफा कमा रही हैं।

इन्होंने राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अन्तर्गत अपने फार्म पर वर्मी कम्पोस्ट इकाई स्थापित की है। इस इकाई के माध्यम से यह अपने खेत पर ही केंचुआ खाद तैयार करती हैं और इस खाद का आँवले के पौधों और सब्जियों में उपयोग करती हैं। इससे पौधों में तो गुणात्मक सुधार होता ही है साथ ही मिट्टी की उर्वरा शक्ति में भी सुधार होता है।

श्रीमती भाकल अपने खेत पर तैयार की हुई केंचुए की खाद का फसल में उपयोग करने से रासायनिक उर्वरकों की खरीद पर होने वाले खर्चे की भी बचत कर रही हैं।

इस प्रकार अपने खेत की उबड़–खाबड़ जमीन में आँवले के पौधों और सब्जियों की खेती कर श्रीमती संतोष भाकल अच्छी गुणवत्ता की अधिक उपज प्राप्त कर, पानी की बचत कर अधिक मुनाफा प्राप्त कर रही हैं।

क्षारीय भूमि सुधार में जिप्सम का उपयोग

जिप्सम एक रंवेदार, पानी में घुलनशील खनिज लवण है, जो कि राजस्थान में बहुतायत में पाया जाता है। जिप्सम का उपयोग क्षारीय जमीन को उपजाऊ बनाने हेतु भूमि सुधारक रसायन के रुप में अधिक किया जाता है। जिप्सम को सिंचाई के पानी के साथ घोलकर देने पर सिंचाई के पानी के क्षारीय दुष्प्रभाव को भी कम किया जा सकता है।

क्षारीय जमीन में पौधों के समस्त पोषक तत्वों के उपस्थित रहने पर भी उपज अच्छी नहीं होती है। ऐसी जमीन को सुधारने की आवश्यकता होती है ताकि उसमें ज्यादा पैदावार ली जा सके। इस प्रकार की जमीन को भूमि सुधारक रसायन जिनमें जिप्सम प्रमुख है, डालकर सुधार जा सकता है।

जिप्सम के उपयोग से जमीन की भौतिक दशा सुधर जाती है तथा रासायनिक व जैविक गुणों में बहुत सुधार आ जाता है। जिप्सम मिट्टी में घुलनशील कैल्शियम की मात्रा बढ़ाता है जो कि क्षारीय गुणों के लिए जिम्मेदार अधिशोषित सोडियम को घोलकर तथा मिट्टी के कणों से हटाकर अपना स्थान बना लेता है तथा भूमि का पी.एच मान कम कर देता है जिससे फसलों के लिए आवश्यक तत्वों की उपलब्धता जमीन में बढ़ जाती है। जिप्सम को जमीन में मिलाने से पहले बारीक पीसकर तथा जमीन पर पाऊडर की तरह भुरकाव कर इसको अच्छी तरह 10–15 से.मी. मिट्टी की सतह में मिला दिया जाता है तथा बाद में सिंचाई कर देते हैं। जिप्सम का उपयोग मृदा की जांच के आधार पर ही करना चाहिए। साधारणतः इसको 8 से 10 क्विटंल प्रति हैक्टर के हिसाब से उपयोग करते हैं। भूमि सुधारक के रुप में जिप्सम का प्रयोग खरीफ में ही करते हैं। सुधार प्रक्रिया के प्रथम वर्ष में खरीफ में हरी खाद के लिए ढेंचा उगाकर खेत में हरी खाद देने से सुधार प्रक्रिया में तेजी लाई जा सकती है।

सिंचाई के उन्नत तरीके अपनाओ फव्वारा,ड्रिप व पाइप लाइन लगाओ

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां "
घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड़ नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14
आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

कुष्माण्ड कुल सब्जियों में कीट नियंत्रण

कुष्माण्ड कुल की सब्जियों को कद्दूवर्गीय सब्जियों के नाम से भी जाना जाता है। इस कुल में लौकी, कद्दू, टिण्डा, करेला, ककड़ी, तरबूज व खरबूजा आदि आते हैं। कद्दूवर्गीय सब्जियाँ विटामिन ए,सी, कैल्शियम आयरन के प्रमुख स्त्रोत मानी जाती हैं। इस वर्ग की सब्जियों के प्रमुख कीट निम्न प्रकार हैं:

1.लाल मकड़ी (वरुथी):– इसकी शिशु (निम्फ) एवं वयस्क दोनों ही अवस्थाए पौधों को हानि पहुँचाती हैं। ये मकड़ी पत्तियों की निचली सतह पर लगती है और रस चूस कर नुकसान पहुँचाती है। इससे पत्तियों पर सफेद धब्बे बन जाते हैं जो बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। अपने बनाये हुए रेशमी जालों से पत्तियों को ढक लेती हैं और हवा के चलने से जमीन से मिट्टी के कण जालों पर लग कर उसे और सघन बना देते हैं। इससे पत्तियों में प्रकाश की क्रिया नहीं हो पाती है जिससे प्रभावित होकर पत्तियाँ गिर जाती हैं। फूल और फल दोनों ही कम लगते हैं तथा उत्पादन में भारी कमी आ जाती है।

2.फल मक्खी:– प्रौढ़ तथा लट दोनों ही अवस्थायें पौधों को नुकसान पहुँचाती है। प्रौढ मक्खी अपने अण्डनिक्षेपक (ओवीपोजिटर) की मदद से फलों में छेद कर गूदे में अण्डे देती है तथा बाहर से इन छेदों को एक लसदार पदार्थ से वापस बन्द कर देती है। अण्डों से 3–5 दिन में लट (मेगट्स)

बनकर, फलों को अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं जिससे फल सड़ने लगते हैं और गिर जाते हैं।

3.हाड़ा बीटल:– इस कीट की दोनों अवस्थाएँ लट (ग्रब) व भृंग पौधों को नुकसान पहुँचाती है। लट और भृंग पत्तियों को ऊपरी सतह से खाती है

तथा पत्तियों पर छेद कर देती है।

4.लाल भृंग:– लट तथा भृंग दोनों ही अवस्थाएँ पौधों को नुकसान पहुँचाती है। भृंग पौधों की पत्तियों की शिराओं के बीच के भाग को खाकर उसमें छोटे–छोटे छेद कर देती है। इस कीट का प्रकोप बसन्त ऋतु में अधिक होता है। इसकी सूण्डियाँ जमीन के अन्दर रहती हैं तथा पौधों के तनें व जड़ों को खाती हैं।

कुष्माण्ड कुल की सब्जियों में समन्वित कीट प्रबंधन:

1. गर्मियों में खेत की 2–3 बार गहरी जुताई करें।
2. फसल चक्र एवं सन्तुलित उर्वरकों का प्रयोग करें।
3. इन सब्जियों की बुवाई समय से पहले, अक्टूबर–नवम्बर में करें तो लाल भृंग का प्रकोप कम होगा।
4. फसल की प्रारम्भिक अवस्था में समय–समय पर निराई–गुड़ाई करने से लाल भृंग की अवस्यक अवस्थाओं और फल मक्खी के शंकुओं (प्यूपा) का नियन्त्रण होता है।
5. राख का भुरकाव करने से लाल भृंग का आक्रमण कम होता है।
6. फल मक्खी व सफेद मक्खी की मोनिटरिंग के लिए क्रमशः मिथाइल यूगोनोल पाश व चिपचिपी पाश का प्रयोग करें।
7. अप्रेल से जुलाई माह में वयस्क मक्खियों की रोकथाम के लिए (प्रलोभक) जहरीले पानी मिले घोल बनाकर खेत में जगह–जगह रख दें। इसके लिए 500 ग्राम गुड़ को दो लीटर पानी में घोलकर उसमें मैलाथियॉन 50 ई. सी. 20 मि.ली. दवा मिलाए। मिट्टी के प्यालों में, 50 मि. ली. घोल प्रति प्याले में डालकर इस कीट को आकर्षित कर नष्ट कर देवें।
8. फल मक्खी से ग्रसित फलों को इकट्ठा करके गड्ढे में दबा दें जिससे इसका जीवन चक्र न बढ़ सके।
9. नीम बीज सत्व 10 प्रतिशत का छिड़काव फसल की प्रारम्भिक अवस्था से ही करें।
10. मकड़ी के नियन्त्रण हेतु प्रोपारजाईट (ओमाईट) 57 ई. सी. 1 मि.ली.दवा प्रति लीटर अथवा डाईकोफॉल 18.5 ई.सी. 2 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

कीटों की संख्या को आर्थिक हानि स्तर तक पहुँचने के पहले कीटनाशी प्रबंधन के सभी मौजूदा तरीकों एवं उपायों को सुसंगत एवं समन्वित रुप से अपनाकर नाशी कीटों की रोकथाम करने से कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से वातावरण को दूषित होने से बचाया जा सकता है।

मिट्टी की जाँच :
पैसे बचाएं- मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं

बुवाई से एक–डेढ़ माह पूर्व मिट्टी की जाँच करावें। आवश्यकता से अधिक उर्वरक खरीद पर होने वाले खर्चे से बचें। जाँच के आधार पर संतुलित खाद एंव उर्वरकों की मात्रा का उपयोग करें। साथ ही आवश्यकता से अधिक उर्वरक उपयोग से भूमि को खराब होने से बचाएं। मिट्टी की जाँच का शुल्क मात्र 5/– रुपये है। जाँच के लिए मिट्टी का नमूना मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में सीधे ही या अपने क्षेत्र के कृषि पर्यवेक्षक के माध्यम से भेज सकते हैं।

गर्मियों में सुस्ताएं नहीं, सुलझाएं समस्याएं

मई–जून गर्मियों के महिने हैं। इन महिनों में खेतों में फसल कम रहती है तथा कृषि कार्य नगण्य रहता है। किसान इस समय का सदुपयोग कैसे करें, यह एक विचारणीय बिन्दु है। किसान अपना ज्यादातर समय इधर–उधर घूमने व सोने में व्यर्थ करता है। किसान केवल खेती के लिए बारिश की बाट जोहता रहता है। आइये जानते हैं किसान किस तरह इस समय का सदुपयोग कर सुव्यवस्थित तरीके से खेती व पशुपालन कर उत्पादन बढ़ा सकता है :–

1. इस समय किसान वर्ष भर की फार्म योजना, फार्म बजट, वर्ष भर पशु चारे–दाने की व्यवस्था का लेखा व पशु टीकाकरण की सूची आदि तैयार कर सकता है। रबी, खरीफ व जायद में ली जाने वाली फसलों, बीज की किस्में, बीज, उर्वरक, रसायनों की आवश्यक मात्रा, कटाई, थ्रेसिंग व बाजार व्यवस्था, ग्रेडिंग, श्रेणीकरण के बारे में योजना बना सकता है।
2. कृषि कार्य में उपयोग होने वाले ट्रैक्टर व कृषि यंत्रों यथा कल्टीवेटर, हैरो, प्लाऊ, कम्बाइन, रीपर आदि की मरम्मत व सार सम्भाल कर सकता है।

3. किसान खेत के चारों तरफ तारबंदी, मेड़बंदी, खेत के टीलों का समतलीकरण, नहरों की सफाई, डिग्गी, फार्म पोण्ड की मरम्मत, गर्मी की जुताई, मिट्टी की जांच, खरपतवारों की कटाई, नए वृक्ष लगाने के लिए गड्ढों की खुदाई आदि कार्य कर सकता है।

4. सिंचाई के साधन ड्रिप सिस्टम, फव्वारा सिस्टम, रेन–गन व पाइप लाइन, स्प्रेयर व डस्टर की देखभाल व मरम्मत कर सकता है।

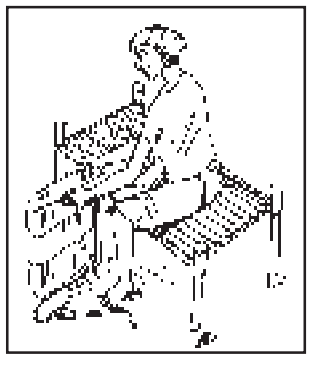

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक	– श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक	– कु. पूनम चौधरी
परामर्श	– श्री के. आर. यादव
डिजाइन	– श्री आर. मैसी